क्रांति समय
हिन्दी दैनिक अखबार में विज्ञापन, प्रैस नोट, जन्म दिन की शुभकामनाएँ, या अपने विस्तार में किसी भी समस्या को अखबार में प्रकाशित करने के लिए संपर्क करें:-
बी-4 घंटी वाला कॉम्पलेक्ष उधना तीन रास्ता, उडुप्पी होटल के बगल में, सूरत-394210
मो. 9879141480

दैनिक
क्रांति समय

RNI.No. : GUJHIN/2018/75100

क्रांति समय
हमारे यहां पर एल.आई.सी., कार-बाईक-ट्रक का इन्सयोरेंशन, रेल टिकट, एयर टिकट बनवाने के लिए संपर्क करें:-
बी-4 घंटी वाला कॉम्पलेक्ष उधना तीन रास्ता, उडुप्पी होटल के बगल में, सूरत-394210
मो. 8980974047

संपादक : सुरेश मौर्या मो. 9879141480
E-mail: krantisamay@gmail.com
सूरत, वर्ष: 02 अंक: 61, मंगलवार, 26 मार्च, 2019, पेज: 4, मुल्य 1 रु.
रजीस्ट्रड ऑफिस:- 191 महादेव नगर, हरि नगर-2 के पीछे, उधना, जिला-सूरत, गुजरात
Email: krantisamay@gmail.com Web site : www.krantisamay.com www.facebook.com/krantisamay1 www.twitter.com/krantisamay1

पहला कॉलम

अमित शाह के खिलाफ शंकरसिंह वाघेला को चुनाव लड़ाने का सुझाव

अहमदाबाद। गुजरात में राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी (राकांपा) के अध्यक्ष जयंत पटेल ऊर्फ जयंत बोस्की ने आज दावा किया उन्होंने पार्टी आलाकमान को गांधीनगर लोकसभा सीट पर भाजपा उम्मीदवार और पार्टी अध्यक्ष अमित शाह के खिलाफ पूर्व मुख्यमंत्री शंकरसिंह वाघेला जैसे दिग्गज और अनुभवी व्यक्ति को उतारने का सुझाव दिया है। बोस्की ने यूएनआई से कहा कि वाघेला पूर्व में गांधीनगर के सांसद रह चुके हैं (वर्ष 1989 में भाजपा के टिकट पर) और वे वहीं रहते भी हैं। उन्हें खासा अनुभव है और वह ऐसे कद्दावर नेता है जो शाह को चुनौती दे सकते हैं। बोस्की ने दावा किया आलाकमान ने उनके सुझाव को सकारात्मकता से लिया है और जल्द ही इस संबंध में औपचारिक घोषणा हो सकती है। ज्ञातव्य है कि वाघेला ने गत 29 जनवरी को राकांपा का दामन थामा था और उन्हें इसका राष्ट्रीय महासचिव बनाया गया था। उधर, वाघेला के करीबी सूत्रों ने बताया कि उनके नेता को आलाकमान ने चुनाव लडने के बारे में कोई निर्देश नहीं दिया है। सूत्रों ने बताया कि वाघेला ने हाल में स्पष्ट कर दिया था कि वह चुनाव नहीं लड़ेंगे और वह अपने उसी निर्णय पर कायम हैं। भाजपा का गढ़ माने जाने वाले गांधीनगर सीट पर पार्टी 1989 से अब तक लगातार काबिज है। वहां लालकृष्ण आडवाणी छह बार सांसद रह चुके हैं जबकि पूर्व प्रधानमंत्री स्वर्गीय अटल बिहारी वाजपेयी भी वहां से सांसद रह चुके हैं।

पुलवामा हमले का राजनीतिकरण कर रही है कांग्रेसः सीतारमण

हैदराबाद । रक्षा मंत्री निर्मला सीतारमण ने पुलवामा आतंकी हमले के बाद पाकिस्तान में भारतीय वायुसेना द्वारा की गई कार्रवाई पर सवाल उठाने के लिए रविवार को विपक्ष और खासतौर पर कांग्रेस पर निशाना साधते हुए उन पर इसका राजनीतिकरण करने का आरोप लगाया। उन्होंने कहा कि भाजपा सरकार ने सशस्त्र बलों को कार्रवाई करने की स्वतंत्रता दी और उन्होंने इसे अंजाम दिया। सीतारमण ने कांग्रेस के नेतृत्व वाली पूर्ववर्ती संप्रग सरकार पर 26 नवंबर 2008 को मुंबई में हुए आतंकी हमले के बाद ऐसी कड़ी कार्रवाई नहीं करने का आरोप लगाया और दावा किया कि सेना जवाब देना चाहती थी अगर सरकार उनसे कुछ करने को कहती तो। उन्होंने कहा, मुंबई हमले के बाद अगर ऐसी ही सख्त कार्रवाई की जाती और मेरे पास यह मानने के पर्याप्त कारण हैं । कि सशस्त्र बलों ने उस वक्त सरकार को कहा था कि अगर आप चाहते हैं कि हम कुछ करें तो हम तैयार हैं, लेकिन हम चाहते हैं कि इस पर आप कोई फैसला लें।' उनका यह बयान इंडियन ओवरसीज कांग्रेस के प्रमुख सैम पित्रोदा के बयान के दो दिन बाद आया है जिसमें उन्होंने सरकार से कहा था कि वह बालाकोट में की गई हवाई कार्रवाई पर और तथ्य' सामने रखें। सीतारमण 'मोदी सेना' द्वारा आयोजित 'तेलंगाना फॉर मोदी' कार्यक्रम को संबोधित कर रही थीं। उन्होंने कहा, हमारे द्वारा जब कार्रवाई की गई,क्या पूछा जा रहा है, आपने वास्तव में कितने लोगों को मारा साक्ष्य क्या है? यह बेहद चौंकाने वाला आचरण है।' उन्होंने कहा, इससे सशस्त्र बलों के मनोबल पर असर पड़ रहा है। इसलिए विपक्ष जब पूछता है, ।

वायुसेना के बेड़े में शामिल हुआ 'चिनूक' हेलिकॉप्टर, अमेरिकी ने इसी से किया था लादेन का खात्मा

नेशनल डेस्क। अमेरिकी बोइंग कम्पनी द्वारा बनाए गए चिनूक सीएच-47आई को भारतीय वायुसेना के बेड़े में 25 मार्च को एयर फोर्स स्टेशन चंडीगढ़ में शामिल कर लिया गया है। इस मौके पर एक इंडक्शन सेरेमनी का आयोजन वायुसेना कर रही है। अमेरिका ने इसी की मदद से आतंकी सरगना ओसामा बिन लादेन का खात्मा किया था। अमेरिकी कंपनी बोइंग द्वारा बनाए गए चार चिनूक सीएच-47आई हेलीकॉप्टर भारत आए हैं। ऐसे 15 हेलीकॉप्टर खरीदे गए हैं। भारतीय वायुसेना के बेड़े में अब तक रूसी मूल के भारी वजन उठाने वाले हेलिकॉप्टर ही रहे हैं लेकिन यह पहली बार होगा कि वायुसेना को अमेरिकी मूल के हेवीलिफ्ट हेलिकॉप्टर मिलेंगे । सीएच-47 चिनूक एक अडवांस्ड मल्टी मिशन हेलिकॉप्टर है जो भारतीय वायुसेना को बेजोड़ सामरिक महत्व की हेवी लिफ्ट क्षमता प्रदान करेगा। यह मानवीय सहायता और लड़ाकू भूमिका में काम आएगा। ऊंचाई वाले इलाकों में भारी वजन के सैनिक साज सामान के परिवहन में इस हेलिकॉप्टर की अहम भूमिका होगी। इससे भारतीय वायुसेना की हेवी लिफ्ट क्षमता में भारी इजाफा होगा। इस हेलिकॉप्टर का दुनिया के कई भिन्न भौगोलिक इलाकों में काफी सक्षमता से संचालन होता रहा है। खासकर हिंद उपमहाद्वीप के इलाके में इस हेलिकॉप्टर की विशेष उपयोगिता होगी। गौरतलब है कि भारतीय वायुसेना ने 15 चिनूक हेलिकॉप्टर को हासिल करने का आर्डर दिया था जिसमें से पहला चिनूक हेलिकॉप्टर इस साल फरवरी में आया था। चिनूक हेलिकॉप्टर अमेरिकी सेना के अलावा कई देशों की सेनाओं में सक्रिय भूमिका निभा रहा है। इसमें पूरी तरह एकीकृत डिजिटल कॉकपिट मैनेजमेंट सिस्टम है। इसके अलावा इसमें कामन एविएशन आर्किटेक्चर काकपिट और अडवांस्ड काकपिट प्रबंध विशेषताएं हैं।

राहुल का बड़ा चुनावी ऐलान- सत्ता में आए तो, गरीबों के खाते में हर साल डालेंगे 72 हजार रुपए

नई दिल्ली।

कांग्रेस अध्यक्ष राहुल गांधी ने लोकसभा चुनाव से पहले सोमवार को बड़ा ऐलान करते हुए कहा कि उनकी पार्टी की सरकार बनने पर देश के हर गरीब परिवार को हर साल 72 हजार रुपए दिए जाएंगे। गांधी ने इसे गरीबी पर 'आखिरी प्रहार' करार देते हुए कहा कि इससे देश के पांच करोड़ परिवारों यानी 25 करोड़ लोगों को गरीबी से बाहर निकाला जा सकेगा। पार्टी की कार्य समिति की बैठक के बाद गांधी ने संवाददाताओं से कहा,''पिछले पांच वर्षों में देश की जनता को बहुत मुश्किलें सहनी पड़ी हैं। हमने निर्णय लिया और हम हिंदुस्तान के लोगों को न्याय देने जा रहे हैं। यह न्याय न्यूनतम आय गारंटी है। ऐसी योजना दुनिया में कहीं नहीं है। कांग्रेस के सत्ता में आने पर देश में हर गरीब परिवार की न्यूनतम आय 12 हजार रुपए प्रति माह सुनिश्चित की जाएगी। यानि कि जिनकी आय 12 हजार से कम है उनको इस योजना का लाभ होगा। यदि किसी परिवार की आय 6 हजार रुपए है तो 6 हजार रुपए मासिक सरकार देगी। यह व्यवस्था तब तक लागू रहेगी जब तक परिवार खुद 12 हजार रुपए महीना नहीं अर्जित कर लेता। इस योजना को आसानी से लागू किया जा सकता है क्योंकि इसके लिए धन उपलब्ध है। कांग्रेस द्वारा शुरू की गई योजना न्याय न्यूनतम आय गारंटी है। ऐसी योजना दुनिया में कहीं नहीं है। कांग्रेस गारंटी देती है कि वह देश में 20 फीसदी सबसे गरीब परिवारों में से प्रत्येक को हर साल 72 हजार रुपए देगी। यह पैसा उनके बैंक खाते में सीधा डाल दिया जाएगा। अगर मोदी जी सबसे अमीर लोगों को पैसा दे सकते हैं तो कांग्रेस भी सबसे गरीब लोगों को पैसा देगी। इसे दुनिया की सबसे बड़ी न्यूनतम आय योजना करार देते हुए राहुल ने कहा कि यह गरीबी पर आखिरी हमला है। यह योजना चरणबद्ध तरीके से चलाई जाएगी। यह बहुत ही प्रभावशाली और सोची समझी योजना है। हमने योजना पर कई अर्थशास्त्रियों से विचार-विमर्श किया है। राहुल ने कहा, पूरा आकलन कर लिया गया। सब कुछ तय कर लिया गया। इससे पांच करोड़ परिवार यानी 25 करोड़ लोगों को फायदा होगा। मनरेगा से 14 करोड़ लोगों को गरीबी से निकाला।

गुजरात की 16 सीटों पर बीजेपी ने उतारे उम्मीदवार, आडवाणी के बाद एक और सांसद का टिकट कटा

नई दिल्ली ।

लोकसभा चुनाव 2019 के मद्देनजर बीजेपी धीरे-धीरे कदम बढ़ाती जा रही है. ताजा जानकारी के मुताबिक बीजेपी ने गुजरात की कुल 26 लोकसभा सीटों में से अब तक 16 सीटों पर अपने उम्मीदवार घोषित कर दिए हैं. आपको बता दें कि बीजेपी के राष्ट्रीय अध्यक्ष अमित शाह के गांधीनगर सीट से चुनाव लड़ने की घोषणा के बाद रविवार को बीजेपी ने 15 सीटों पर अपने उम्मीदवारों के नाम भी घोषित कर दिए हैं. अब तक बीजेपी ने कुल दो सांसदों को दोबारा चुनाव लड़ने का मौका नहीं दिया है जिसमें पहला नाम तो उसके वयोवृद्ध नेता लालकृष्ण आडवाणी का है जबकि दूसरा नाम सुरेंद्रनगर सीट से मौजूदा सांसद देवजी फतेपरा का है. रविवार को जारी हुई इस लिस्ट की सबसे खास बात यह है कि इसमें जिन 15 उम्मीदवारों को मौका दिया गया है उनमें से 14 मौजूदा सांसदों को ही टिकट दिया गया है. जबकि सुरेंद्रनगर के मौजूदा सांसद का टिकट काट दिया गया है. यहां आपको यह भी बता दें कि गुजरात के सुरेंद्रनगर से मौजूदा सांसद देवजी फतेपरा को दोबारा टिकट नहीं दिया गया है. खास बात यह है कि दो बार कांग्रेस के टिकट पर विधायक रहे देवजी फतेपरा 2014 में बीजेपी में शामिल हुए थे. बीजेपी ने उन्हें 2014 के लोकसभा चुनाव में टिकट भी दिया था जिसके बाद वे सांसद भी बने. अब जब इस बार उनका टिकट कट गया है तो वे नाराजगी में इसे आपसी गुटबाजी बता रहे हैं और बीजेपी उम्मीदवार को हराने की धमकी दे रहे हैं. गांधीनगर से अमित शाह, कच्छ से विनोद चावड़ा, अहमदाबाद पश्चिम से डॉ. किरीट सोलंकी, सुरेन्द्रनगर से महेन्द्र मुंजपरा, राजकोट से मोहन कुंडारिया, जामनगर से पूनम माडम, अमरेली से नारण काछडिया, भावनगर से

भारतीबहेन शियाळ, बारडोली से प्रभु वसावा, वडोदरा से रंजनबेन भट्ट, नवसारी से सी. आर. पाटिल, वलसाड से के. सी पटेल, भरूच से मनसुख वसावा, दाहोद से जशवंत सिंह भाभोर, साबरकांठा से दीपसिंह राठौड़ और खेड़ा से देवुसिंह चौहाण के नाम की घोषणा हो चुकी है. बीजेपी आलाकमान द्वारा गुजरात लोकसभा की 10 सीटों के लिए उम्मीदवारों के नाम की घोषणा करना अभी बाकी है. बाकी बची 10 सीटों के लिए कुछ नए नाम सामने आने की उम्मीद है. दरअसल, ये ऐसी सीटें हैं जहां एक से ज्यादा मजबूत उम्मीदवार होने के चलते नाम फाइनल नहीं हो पा रहे हैं।

नहीं टूटेगा भारतीय राजनीति के 'प्रथम रथयात्री' का मौन

नई दिल्ली।

भारतीय राजनीति के 'प्रथम रथयात्री' लालकृष्ण अडवानी एक ऐसा नाम हैं, जिसने पिछले करीब छह दशक में कई सियासी हवाएं अपनी सूझबूझ से पलटी हैं। उन्होंने सियासत की विपरीत हवाओं का रुख भाजपा के पक्ष में मोड़ा और कभी दो सीटों पर सिमट गई पार्टी को सत्ता के दरवाजे तक लाए। मगर अब पांच साल से वह मौन हैं। पार्टी ने उन्हें इसबार गुजरात के गांधीनगर से टिकट नहीं दिया है। अडवानी दूरदेशी फैसलों के लिए पहचाने जाते हैं। राम मंदिर, रथयात्रा और हिंदुत्व पर अपने रुख से उन्होंने पार्टी को उत्तर भारत में मजबूत किया। वह सूझबूझ भरे संगठन कौशल, प्रखर बयानों और प्रबुद्ध व्यक्तित्व के लिए जाने जाते हैं। लेकिन जब उनके खुद के बारे में पार्टी में फैसले होने लगे तो वे उन मौकों पर चूक गये। वर्ष 2005 की चर्चित पाकिस्तान यात्रा और 2013-14 में प्रधानमंत्री पद के लिए उम्मीदवार के चयन के मामले में उनके निर्णय उन्हें भारी पड़े। पार्टी ने उन्हें पहले मार्गदर्शक मंडल में डाला और अब उन्हें टिकट तक नहीं दिया गया। उन्हें राजनीति के अर्श से फर्श पर धकेल दिया गया है मगर वह मौन हैं। अडवानी के राजनीतिक जीवन पर यदि नजर डालें तो 2004 का वर्ष निर्णायक था। भारतीय राजनीति में तब यह लगभग तय हो गया था कि अब भाजपा की कमान अडवानी ही संभालेंगे। उन्हें पीएम इन वेटिंग कहकर प्रचारित किया गया। इस बीच 2005 में वह पाकिस्तान यात्रा पर गए। इस यात्रा का एक छिपा मकसद सभी वर्गों में अडवानी की स्वीकार्यता बढ़ाना था। क्योंकि रथयात्राओं और रामजन्म भूमि आंदोलन के कारण उनकी छवि एक हिन्दूवादी नेता की बन चुकी थी। पाकिस्तान यात्रा के दौरान अडवानी ने न केवल मोहम्मद अली जिन्ना की मजार पर जाकर उन्हें श्रद्धांजलि दी, बल्कि उन्हें एक 'धर्मनिरपेक्ष नेता' भी बताया। अडवानी के इस बयान से राजनीतिक तूफान खड़ा हो गया। पाकिस्तान से लौटने के फौरन बाद उन्हें भाजपा अध्यक्ष पद से इस्तीफा देना पड़ा। तमाम राजनीतिक खींचतान के बावजूद भाजपा ने अडवानी को अपना चेहरा बनाते हुए 2009 का चुनाव लड़ा। किंतु भाजपा सरकार बनाने में विफल रही और इसी के साथ अडवानी की संभावनाओं का दायरा भी सिकुड़ गया। गुजरात के तत्कालीन मुख्यमंत्री नरेन्द्र मोदी उन्हें चुनौती दे सकने वाले नेता के रूप में धीमे धीमे उभरने लगे।

भाजपा ने 2014 के आम चुनाव से पहले मोदी को पार्टी की अभियान समिति का अध्यक्ष बनाया तो अडवानी ने परोक्ष असहमति जतायी। फिर जब पार्टी ने मोदी को प्रधानमंत्री चुना तो उन्होंने चुप्पी साध ली। मोदी सरकार में 75 वर्ष की आयु का एक अलिखित नियम बनाकर अडवानी सहित कई उम्रदराज नेताओं को कोई मंत्री पद नहीं दिया।

हार के डर से भाजपा के नेता चुनाव प्रचार से बच रहे : अखिलेश

लखनऊ । समाजवादी पार्टी(सपा) अध्यक्ष अखिलेश यादव ने सोमवार को प्रदेश सरकार पर निशाना साधते हुए कहा कि जनता के आक्रोश और हार के डर से भाजपा के नेता और कार्यकर्ता गर्मी का बहाना करके चुनाव प्रचार से बच रहे हैं। उन्होंने ट्वीट कर कहा, विकास पूछ रहा है..भाजपा अपनी रैलियों में केवल विपक्ष की ही बातें क्यों कर रही है? क्या भाजपा के पांच साल के शासनकाल में उनकी अपनी कोई भी सकारात्मक उपलब्धि नहीं है? जनता के आक्रोश और हार के डर से भाजपा के नेता और कार्यकर्ता गर्मी का बहाना करके चुनाव प्रचार से बच रहे हैं। उन्होंने आगे लिखा, यूपी शिक्षा मित्रों, यूपी बीपीएड, यूपीटीईटी 2011, यूपी शिक्षा प्रेरक, यूपीबीपीएड अनुदेशक दावेदार, यूपी ग्राम रोजगार सेवक, यूपी आंगनबाड़ी सहायिका, यूपी आशा बहू, यूपी रसोइया, कार्यरत अनुदेशक इन लोगों को स्थाई रोजगार चाहिए।

कमल हासन ने ममता से की मुलाकात, कहा- मिलकर गर्व हो रहा

नेशनल डेस्क।

लोकसभा चुनाव को लेकर नेताओं के बीच मुलाकात का दौर तेज हो गया है। भाजपा के खिलाफ तमाम दलों में एकजुटता जोर पकड़ रही है। इसी सिलसिले में मक्कल नीधि मय्यम के प्रमुख और अभिनेता कमल हासन ने सोमवार को पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी से मुलाकात की। ये मुलाकात हावड़ा के नबन्ना में हुई। ममता से मुलाकात के बाद हासन ने कहा कि उनसे मिलकर गर्व महसूस हो रहा है कि अंडमान में टीएमसी के साथ हमारा गठबंधन है। उम्मीद है कि भविष्य में यह रिश्ता और गहराएगा। मैं उम्मीदवार के प्रचार के लिए वहां जा रहा हूं। गौरतलब है कि ममता बनर्जी इस वक्त भाजपा और पीएम नरेंद्र मोदी के विरोध की धुरी बनीं हुई हैं। महागठबंधन की परिकल्पना उन के इर्द गिर्द ही घूमती है। भाजपा के खिलाफ वह कोलकाता में बड़ी रैली भी कर चुकी हैं। यहां इस बार टीएससी और भाजपा के बीच असली मुकाबला है। वहीं कमल हसन ने अपने संगठन के साथ राजनीति में एंट्री कर ली है। उन्होंने पिछले साल अपनी पार्टी एमएनएम बनाई। 2014 के शुरूआती दौर में वह भाजपा और पीएम मोदी के समर्थन में नजर आते थे। लेकिन वक्त बीतने के साथ-साथ वह भाजपा का विरोध करते चले गए।

कश्मीर : सीआरपीएफ के काफिले में शामिल होंगी बुलेटप्रूफ 30 सीटर बसें

नई दिल्ली। केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल (सीआरपीएफ) कश्मीर घाटी में अपने कर्मियों के काफिलों की सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए बख्तरबंद गाडियों (एमपीवी) के नए बेड़े एवं 30 सीटों वाली बसों की खरीद करेगा। बल के प्रमुख ने यह जानकारी दी। अर्धसैनिक बल ने आतंकवाद रोधी एवं कानून-व्यवस्था संबंधी कर्तव्यों के निर्वाह के लिए कश्मीर घाटी में तैनात अपनी 65 बटालियनों के लिए अपने बम निरोधी दस्ते को भी बढ़ाने का फैसला किया है। बल ने ये नए उपाय 14 फरवरी को पुलवामा में हुए आतंकवादी हमले के बाद किए हैं। इस हमले में जम्मू से श्रीनगर जा रहे काफिले की एक बस में सवार 40 कर्मी उस समय शहीद हो गए थे जब आत्मघाती हमलावर ने विस्फोटकों से लदे वाहन से बस को टक्कर मार दी थी। सीआरपीएफ के महानिदेशक आर आर भटनागर ने बताया,हम कश्मीर में अपनी आईईडी रोधी क्षमताओं को बढ़ा रहे हैं। हम और बख्तरबंद गाडियां खरीद एवं भेज रहे हैं और बल की बसों को बुलेट प्रूफ बना रहे हैं। बड़ी बसों को बख्तरबंद बनाना मुश्किल है इसलिए हम 30 सीटों वाली छोटी बसों को खरीदने के बारे में विचार कर रहे हैं जिन्हें बेहतर तरीके से बख्तरबंद किया जा सके।'

भाजपा के मंत्री ने दी राहुल गांधी को चुनौती, विष पीकर जिंदा रहकर दिखाएं

अहमदाबाद।

गुजरात के एक मंत्री ने पौराणिक कथाओं का हवाला देकर राहुल गांधी को विष पीने और उसके बाद जिंदा रहकर दिखाने की चुनौती देकर नए विवाद को जन्म दे दिया है। मंत्री ने कहा कि अगर राहुल वाकई शिव के 'अवतार' हैं जैसा कि उनके पार्टी कार्यकर्ता दावा करते हैं तो वह विष पीकर जिंदा रह कर दिखाएं। सूरत के बारदोली में एक जनसभा में गुजरात जनजातीय विकास मंत्री गणपत वासवा ने कहा कि गांधी शिव के अवतार'' हैं, यह तभी सही माना जाएगा अगर वह 500 ग्राम जहर के सेवन'' के बाद जीवित रह जाएं। वासवा ने कहा, कांग्रेस के लोग दावा करते हैं कि राहुल गांधी शिव का अवतार हैं। अब, क्योंकि भगवान शिव ने लोगों को बचाने के लिए विष को पी लिया था , मैं चाहता हूं कि कांग्रेस के कार्यकर्ता अपने नेता को 500 ग्राम जहर पीने के लिए दें।''

वासवा ने कहा, अगर जहर पीने के बाद वह भगवान शिव जैसे जीवित रह जाएं तो हम सभी मान लेंगे कि वह शिव के सच्चे अवतार हैं।'' भाजपा मंत्री के शिव वाले इस तंज से बौखलाई कांग्रेस ने इसे अत्यंत दुर्भाग्यपूर्ण'' करार दिया है और कहा है कि यह पार्टी के वास्तविक चरित्र'' को दर्शाती है जो चुनाव में हार के डर से सामने आ रहा है।

गुजरात कांग्रेस के प्रवक्ता मनीष दोशी ने कहा, हमारे नेता के बारे में ऐसी टिप्पणियां अत्यंत दुर्भाग्यपूर्ण हैं। यह भाजपा एवं उसके नेताओं के वास्तविक चरित्र को दर्शाता है। वह कुंठा से ऐसे बयान दे रहे हैं क्योंकि उन्हें लोकसभा में उनकी हार नजर आ रही है।'' उन्हें लोकसभा में उनकी हार नजर आ रही है।''

सिख विरोधी दंगा- न्यायमूर्ति खन्ना ने सज्जन कुमार की अपील की सुनवाई से खुद को किया अलग

नई दिल्ली।

उच्चतम न्यायालय के न्यायाधीश न्यायमूर्ति संजीव खन्ना ने सोमवार को सिख विरोधी दंगा मामले में दोषी ठहराए गए कांग्रेस के पूर्व नेता सज्जन कुमार की अपील की सुनवाई से एक बार फिर खुद को अलग कर लिया। सज्जन कुमार को दिल्ली उच्च न्यायालय ने उम्र कैद की सजा सुनाई है जिसे इस पूर्व सांसद ने शीर्ष अदालत में चुनौती दे रखी है। न्यायमूर्ति खन्ना ने इससे पहले 25 फरवरी को भी सज्जन कुमार की अपील की सुनवाई से खुद को अलग कर लिया था। न्यायमूर्ति खन्ना उस समय प्रधान न्यायाधीश रंजन गोगोई की अध्यक्षता वाली पीठ में शामिल थे। सज्जन कुमार की अपील सोमवार को न्यायमूर्ति एस ए बोबडे और न्यायमूर्ति संजीव खन्ना की पीठ के समक्ष सूचीबद्ध थी। पीठ ने कहा कि इस अपील पर अब दो सप्ताह बाद सुनवाई की जाएगी। उच्च न्यायालय ने सज्जन कुमार को दक्षिण पश्चिम दिल्ली के छावनी इलाके में राज नगर पार्ट एक में एक और दो नवंबर, 1984 को पांच सिखों की हत्या और राज नगर पार्ट दो में एक गुरूद्वारा जलाने की घटना से संबंधित मामले में 17 दिसंबर, 2018 को दोषी ठहराते हुए उन्हें उम्र कैद की सजा सुनाई थी। न्यायालय के आदेश पर सज्जन कुमार ने 31 दिसंबर को अदालत में समर्पण कर दिया था। तत्कालीन प्रधानमंत्री इन्दिरा गांधी की 31 अक्टूबर, 1984 को उनके दो सिख अंगरक्षकों द्वारा गोली मार हत्या करने की घटना के बाद सिख विरोधी दंगे भड़के थे। इन दंगों में सिखों को निशाना बनाया गया था और उनकी संपत्ति तथा धार्मिक स्थलों में आगजनी की घटनाएं हुई थीं। इन दंगों में अकेले दिल्ली में ही 2700 से अधिक सिखों की हत्या कर दी गयी थी। इस मामले में दिल्ली की विशेष अदालत ने सज्जन कुमार को बरी कर दिया था।

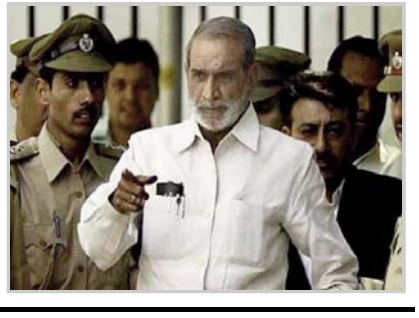

संपादकीय

उम्र और परिपक्वता

इंसान कब परिपक्व होता है या परिपक्वता की सही उम्र क्या है? ब्रिटेन के मनोवैज्ञानिकों के ताजा शोध के नतीजे न केवल चौंकाते हैं, बल्कि सोचने पर विवश भी करते हैं। उनका मानना है, हमें 18 की उम्र में भले ही वयस्क मान लिया जाए, लेकिन हमारा मस्तिष्क 30 की उम्र तक परिपक्वता अर्जित करता है। भारत की बात करें, तो 18 की उम्र में ही वाहन चलाने का लाइसेंस, मतदान का अधिकार, सेना में भर्ती होने का मौका मिलता है, एक बालिग के रूप में सारे कानूनी अधिकार मिलते हैं। बेटा या बेटी 18 की उम्र के होते हैं, तो यह मान लिया जाता है कि वे अपनी मर्जी केमालिक हैं। लेकिन सावधान! जरूरी नहीं कि वे इसी उम्र में परिपक्व हो जाएं। ब्रिटेन में चल रहा शोध इशारा करता है कि 18 की उम्र भले ही वयस्क वैधता का एक पड़ाव हो, लेकिन परिपक्वता के लिए तो इंतजार करना पड़ता है। हमारे समाज में परंपरागत रूप से देखें, तो प्रजनन शक्ति अर्जित करते ही इंसान को परिपक्व मान लिया जाता है, किंतु विज्ञान यह पहले ही सिद्ध कर चुका है कि प्रजनन शक्ति या क्षमता का मस्तिष्क की परिपक्वता से कोई लेना-देना नहीं है। परिपक्व होने में मस्तिष्क की अपनी गति है। इस पूरे विषय के दो महत्वपूर्ण पहलू हैं, एक पहलू चिकित्सा विज्ञान से जुड़ा है, तो दूसरा पहलू कानून-व्यवस्था से जुड़ा हुआ है। चिकित्सकीय दृष्टि से देखें, तो दिमाग के रहस्य बहुत धीरे-धीरे खुल रहे हैं। शोध कमोबेश यही इशारा करते रहे हैं कि पुरोमुखीय और पश्चमस्तिष्क का विकास धीरे-धीरे ही होता है। वैज्ञानिक खोज इस बात तक पहुंच चुकी है कि पुरोमुखीय मस्तिष्क में तत्काल निर्णय लेने, सोचने, योजना बनाने, स्थितियों के आकलन का काम होता है। पश्चमस्तिष्क का विकास परिवेश पर निर्भर करता है। वैज्ञानिक इस बात से सहमत हैं कि जीवन परिवेश यदि अनुकूल हो या विवश करे, तो मस्तिष्क जल्दी परिपक्व होता है। यह भी संभव है, यदि जीवन परिवेश अनुकूल न हो, तो व्यक्ति के वयस्क या अधेड़ होने के बावजूद उसका मस्तिष्क परिपक्व न होने पाए। इस चिकित्सकीय शोध की एक अच्छी व्यंजना या सबक यह भी है कि जीवन में चुनौती, संघर्ष, परिश्रम जरूरी है। कोई दो राय नहीं, संघर्ष से गुजरे हुए लोग ही आगे बढ़ते हैं और कोई कीर्तिमान बनाते हैं। कानून-व्यवस्था की दृष्टि से देखें, तो यह शोध उथल-पुथल मचाने के लिए काफी है। यदि 30 से कम उम्र में कोई अपराध करे, तो क्या उसे अपरिपक्व मानकर छोड़ दिया जाए? पश्चिम में अपराध शास्त्र के लिए यह बड़ा प्रश्न विगत वर्षों में चिंतन का प्रमुख बिंदु रहा है। कुछ वर्ष पहले ब्रिटेन के हाउस ऑफ कॉमन्स में सिफारिश पेश हुई थी कि 18 से 25 की उम्र वाले अपराधियों से अलग ढंग या कुछ नरमी से निपटा जाए। एक अन्य रिपोर्ट बताती है कि ज्यादातर युवा 25 की उम्र के बाद अपराध करना बंद कर देते हैं। तो क्या यह माना जाए कि 25 की उम्र में दिमाग परिपक्व हो जाता है? क्या तब समझ आ जाती है, अपराध या बदमाशियां बंद हो जाती हैं? पश्चिमी देशों में यह मांग भी होती रही है कि 30 की उम्र तक अपराधियों को अलग ढंग से देखा जाए। वास्तव में किसी ऐसे ठोस नतीजे पर पहुंचने से पहले हमें मस्तिष्क की अनछुई कंदराओं को और पुख्ता तौर पर खंगालना होगा। बेशक, मस्तिष्क को हम जितना जानेंगे, हम उतने ही मानवीय होते चले जाएंगे।

ट्वीट

जहमत

लगता है जैसे कि महात्मा गांधी के ''तीन बंदरों' ने योजना बनाकर हमें मोबाइल थमा दिया है, जिसके हाथ में होने पर, ना तो हम किसी से बात करते हैं, ना किसी की ओर देखते हैं ना ही किसी को सुनने की जहमत उठाते हैं।

हर्ष गोयनका, उद्योगपति

परीक्षा ही तो है जिंदगी का हर कदम

क्षमा शर्मा

पार्कों में पीले पत्तों की भरमार है। घास भी सूख सी गई है। कल तक जो हवा ठिठुराती थी, उसमें अब हल्की गर्मी आने लगी है। और सबसे बड़ी बात शाम के समय जो पार्क बच्चों के खेल और खिलखिलाहट से भरा रहता था, वह सुनसान है। बच्चों के इम्तिहान जो चल रहे हैं। गए रात तक खिड़कियों से रोशनी झरकर आती रहती है। पता चलता है कि बच्चे पढ़ रहे हैं। हर बच्चे की चाहत है कि उसके अधिक से अधिक नम्बर आएं। वह दोस्तों से बाजी मार ले जाए। माता-पिता की उम्मीद भी यही रहती है कि उनका बच्चा सबसे ज्यादा नम्बर लाएगा और इस बहाने उनका नाम रोशन करेगा। मुश्किल यह है कि अगर अच्छे नम्बर न आएं तो कहीं दाखिला नहीं मिलता। दाखिला न मिले तो जीवन में जो कुछ करने की तमन्ना थी, वह कैसे पूरी हो। लेकिन यह भी सच है कि एक कक्षा में अगर तीस बच्चे हैं तो सब तो फर्स्ट नहीं आ सकते। कोई फर्स्ट आएगा तो कोई आखिरी स्थान पर भी रहेगा। लेकिन इस उम्र की पढ़ाई और मेहनत हमेशा काम आती है। मेहनत करने की आदत एक बार पड़ जाए तो वह हमेशा बनी रहती है। और यह भी सबने सुना ही होगा कि मेहनत का फल मीठा होता है। लेकिन कई बार होता यह है कि अच्छे नम्बर लाने की दौड़ में बच्चे इतने लग जाते हैं कि तनाव के शिकार हो जाते हैं। स्कूलों में पढ़ने वाले बच्चों को तनाव के कारण तरह-तरह की बीमारियां भी हो रही हैं। वे हाई ब्लड प्रेशर और टाइप वन डायबिटीज के शिकार हो रहे हैं। इसीलिए सीबीएसई ने बच्चों के लिए हेल्पलाइन बनाई है जहां वे विशेषज्ञों से अपनी बात कह सकते हैं। अपनी चिंताएं बांट सकते हैं। क्या करें, क्या न करें, इसकी सलाह ले सकते हैं। रेडियो पर ऐसे बहुत से कार्यक्रम शुरू हो जाते हैं, जिनमें तरह-तरह के विशेषज्ञ बच्चों को राय देते हैं। बच्चे किस तरह अपनी पढ़ाई करें, जिससे कि चिंता खत्म हो सके और उनकी तैयारी भी अच्छी हो जाए, यह बताते हैं। अखबारों में ऐसे लेख छपते हैं, जो माता-पिता को गाइड करते हैं कि इम्तिहान के दिनों में वे बच्चों से किस तरह का व्यवहार करें, उनके खाने-पीने और पोषण पर ध्यान दें। और सबसे बड़ी बात कि बच्चा सही समय पर सो जाए, जिससे कि उसकी न केवल थकान मिटे, तनाव कम हो, बल्कि अगले दिन वह तरोताजा होकर इम्तिहान की तैयारी कर सके। हालांकि यह तो है कि बच्चे ही क्या, हम बड़े भी जब किसी नए काम को शुरू करते हैं तो हम में से भी बहुत से चिंता और तनाव के शिकार होते हैं। किसी भी काम में सफल होने के लिए थोड़ा-बहुत तनाव होना, उस काम को पूरा करने की चिंता करना गलत नहीं है। क्योंकि अगर आज का काम पूरा नहीं होगा तो उसे कल करना होगा और कल कभी आता नहीं। फिर पिछले दिन का काम अगर आज करना पड़े तो आगे के सारे काम रुक जाते हैं। कुछ दिन पहले एक शोध में यही कहा गया था कि जीवन में थोड़ा-बहुत तनाव बुरी बात नहीं है। यह हमें काम करने को तो प्रेरित करता ही है, आने वाली चुनौतियों से जूझने के लिए भी तैयार करता है। दुनिया में शायद ही कोई ऐसा हो, जिसे मुश्किलों का सामना न करना पड़ा हो। इसलिए इम्तिहान के दिनों में अगर बच्चे थोड़ी-बहुत चिंता करते भी हैं तो यह उनके भविष्य के लिए अच्छा है, मगर तब तक जब तक कि वे थोड़ी ही देर चिंतित हों, हमेशा चिंता में न डूबे रहें। उन्हें यह बताना भी जरूरी होता है कि इम्तिहान आज शुरू हुए हैं, तो खत्म भी होंगे। इसके अलावा उनकी मेहनत रंग लाएगी। पहले प्राइमरी कक्षाओं और उसके बाद बारहवीं तक की पढ़ाई ही वह रास्ता है जिस पर चलकर वे आगे इंजीनियर, डाक्टर बनेंगे। शिक्षक, समाजसेवी बनेंगे। बहुत से आईएएस और आईपीएस तथा अन्य सेवाओं में सफलता प्राप्त करेंगे। वैसे भी आज के बच्चे जब बड़े होंगे तो उन्हें जीवन की तमाम मुश्किलों और चुनौतियों का सामना करना ही पड़ेगा। रिसर्च कहती है कि जिन बच्चों को बहुत प्यार से पाला जाता है, कभी डांटा-डपटा नहीं जाता, जिंदगी की चुनौतियों का सामना करने के लिए तैयार नहीं किया जाता, वे जब बड़े होते हैं तो मामूली बातों पर डरते हैं। उनका आत्मविश्वास बहुत कम होता है। वे अक्सर अपने काम को खुद करने के मुकाबले किसी और का कंधा तलाशते हैं। और किसी मुश्किल का सामना करने के मुकाबले उससे बच निकलने का रास्ता ढूंढते हैं। इसलिए बच्चों को बचपन से इस बात के लिए भी तैयार किया जाना जरूरी है कि इम्तिहान तो क्या, कोई भी चुनौती हो तो उससे डरें नहीं। जो जूझते हैं, वे ही आगे बढ़ते हैं, उन्हीं के रास्ते आसान होते हैं। जो डरते हैं, बचकर भागते हैं, वे कहीं नहीं पहुंच पाते। आपने देखा होगा कि बहुत से माता-पिता बच्चों के सामने अपनी आर्थिक स्थिति का बयान बहुत बढ़ा-चढ़ाकर करते हैं। वे बजाय इसके कि बच्चे से कहें कि खूब पढ़ो-लिखो मेहनत करो, कहते हैं कि तू किसी बात की चिंता मत कर। तेरे लिए हमारे पास इतना है कि सात पुश्तें खा सकें। ऐसी बातें बच्चे पर बहुत बुरा असर डालती हैं। जब उसके सामने माता-पिता की कही बातें झूठ और कोरी गप साबित होती हैं तो उसकी निराशा का ठिकाना नहीं रहता। विशेषज्ञ कहते हैं कि बच्चे भविष्य के नागरिक हैं। वे जो देखते हैं, वही सीखते हैं। माता-पिता उन्हें वह सिखाएं जैसा वे उन्हें बनाना चाहते हैं। जिंदगी सीधी सड़क नहीं, ऊबड़खाबड़ रास्ता है। जिस पर कभी गड्ढे मिलते हैं, कभी ट्रैफिक, कभी इतनी मारामारी कि इसका सामना करना पड़ता है। बच्चों को इम्तिहान भी यही सिखाते हैं कि जैसा अब कर लोगे, समय का सदुपयोग करोगे, अपनी सेहत का ध्यान रखोगे और किसी बात से घबराओगे नहीं, तभी आगे बढ़ोगे। जिंदगी तो तुम्हारी राह देख ही रही है। इसलिए इम्तिहानों की मेहनत और उससे उपजे तनाव से डरने के मुकाबले उसका सामना करो।

लेखिका वरिष्ठ पत्रकार हैं।

ज्ञान गंगा

खुद को पहचानें

श्रीराम शर्मा आचार्य/ शरीर अनेक सुख-सुविधाओं का माध्यम है, ज्ञानेन्द्रियों के द्वारा रसास्वादन और कर्मेन्द्रियों के द्वारा उपार्जन करने वाला शरीर ही सांसारिक हर्षोल्लास प्राप्त करता है। इसलिए इसे स्वस्थ, सुन्दर, सुसज्जित एवं समुन्नत स्थिति में रखना चाहिए। इसी दृष्टि से उत्तम आहार-विहार रखा जाता है, तनिक सा रोग-कष्ट होते ही उपचार कर ली जाती है। शरीर की ज्योति ही मस्तिष्क की उपयोगिता है। आत्मा की चेतना और शरीर की गतिशीलता का भौतिक व आत्मिक समन्वय का प्रतीक है, यह मन मस्तिष्क इसकी अपनी उपयोगिता है। मन की कल्पना, बुद्धि का निर्णय, चित्त की आकांक्षा और अहन्ता की प्रवृत्ति इन चारों से मिलकर अन्तःकरण चतुष्टय बना है। सभ्यता, संस्कृति, शिक्षा-दीक्षा द्वारा मस्तिष्क को विकसित एवं परिष्कृत करने के लिए हमारी चेष्टा निरन्तर रहती है। शरीर को समुन्नत स्थिति में रखने के लिए पौष्टिक आहार, व्यायाम, विनोद आनन्द आदि की अगणित व्यवस्थाएं की गई हैं। मस्तिष्कीय उन्नति के लिए स्कूल, कॉलेज, प्रशिक्षण केंद्र, गोष्ठियां, सभाएं विद्यमान हैं। पुस्तिकाएं, रेडियो, फिल्म आदि का सृजन किया गया है, जिससे कि मस्तिष्कीय समर्थता बढ़े। संसार में जो कुछ भी हो रहा है। यहां उसकी निन्दा या प्रशंसा नहीं की जा रही है। ध्यान उस तथ की ओर आकर्षित किया जा रहा है, जो इस सबसे अधिक उत्कृष्ट एवं आवश्यक था, उसे एक प्रकार से भुला ही दिया गया। समझ यह लिया गया है कि मनुष्य जो कुछ है, वह शरीर और मन तक की सीमित है। इससे आगे, इससे ऊपर और कोई हस्ती नहीं। यदि इससे ऊपर भी कुछ समझा गया होता तो उसके लिए भी जीवन क्रम में वैसा ही स्थान मिलता, जैसा शरीर और मन के लिए होता है, पर हम देखते हैं वह तीसरी सत्ता जो इन दोनों से लाखों, करोड़ों गुनी अधिक महत्वपूर्ण है; एक प्रकार से उपेक्षित ही पड़ी है और वह लाभ और आनन्द जो अत्यन्त सुखद एवं समर्थ है एक प्रकार से अनुपलब्ध ही रहा है। रोज ही यह कहा और सुना जाता है कि हमारे शरीर और मन से ऊपर आत्मा है। सत्संग और स्वाध्याय के नाम पर यह शब्द आए दिन आंखों और कानों के पदरे पर टकराते हैं, पर वह सब ऐसी विडम्बना बन कर रह जाता है, जो मानो कहने-सुनने और पढ़ने-लिखने के लिए ही खड़ी की गई हो। वास्तविकता से जिसका कोई सीधा सम्बन्ध न हो।

आज का राशिफल

मेष संतान के दायित्व की पूर्ति होगी। धन, पद, प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। राजनैतिक महत्वाकांक्षा की पूर्ति होगी। किसी बहुमूल्य वस्तु के पाने की अभिलाषा पूरी होगी। वाणी की सौम्यता बनाये रखने की आवश्यकता है।

वृषभ पारिवारिक जीवन सुखमय होगा। उपहार व सम्मान का लाभ मिलेगा। यात्रा में अपने सामान के प्रति सचेत रहें चोरी या खोने की आशंका है। शासन सत्ता का सहयोग मिलेगा। धन हानि की संभावना है।

मिथुन जीवनसाथी का सहयोग व सानिध्य मिलेगा। भाग्यवश कुछ ऐसा होगा जिसका आपको लाभ मिलेगा। प्रेम प्रसंग प्रगाढ़ होंगे। भारी व्यय का सामना करना पड़ सकता है। वाहन प्रयोग में सावधानी अपेक्षित है।

कर्क व्यावसायिक व पारिवारिक योजना सफल होगी। संतान के दायित्व की पूर्ति होगी। पिता या उच्चाधिकारी का सहयोग मिलेगा। फिजूल खर्ची पर नियंत्रण रखें। नए अनुबंध प्राप्त होंगे।

सिंह व्यावसायिक योजना सफल होगी। स्वास्थ्य के प्रति सचेत रहें। पारिवारिक जनों का सहयोग मिलेगा। वाद विवाद की स्थिति आपके हित में न होगी। मकान, सम्पत्ति व वाहन की दिशा में किया गया प्रयास सफल होगा।

कन्या बेरोजगार व्यक्तियों को रोजगार मिलेगा। पारिवारिक जनों के मध्य सुखद समय गुजरेगा। वाणी की सौम्यता आपकी प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। संतान के दायित्व की पूर्ति होगी। वाहन प्रयोग में सावधानी रखें।

तुला आर्थिक योजना को बल मिलेगा। पिता या उच्चाधिकारी से तनाव मिलेगा। शासन सत्ता का सहयोग मिलेगा। उपहार व सम्मान का लाभ मिलेगा। विरोधी परास्त होंगे। धन लाभ होने के योग हैं।

वृश्चिक जीवनसाथी का सहयोग व सानिध्य मिलेगा। धन, पद, प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। रुपए पैसे के लेन देन में सावधानी रखें। किसी बहुमूल्य वस्तु के पाने की अभिलाषा पूरी होगी। यात्रा देशाटन की स्थिति सुखद व लाभप्रद होगी।

धनु आर्थिक दिशा में प्रगति होगी। पारिवारिक जीवन सुखमय होगा। रुका हुआ कार्य सम्पन्न होगा। स्वास्थ्य के प्रति सचेत रहें। कोई महत्वपूर्ण निर्णय न लें। व्यर्थ की भागदौड़ रहेगी।

मकर पिता या उच्चाधिकारी का सहयोग मिलेगा। राजनैतिक क्षेत्र में किए गए प्रयास सफल होंगे। वाणी की सौम्यता आपको लाभ दिलायेगी। भारी व्यय का सामना करना पड़ सकता है। वाहन प्रयोग में सावधानी रखें।

कुम्भ पारिवारिक जीवन सुखमय होगा। आर्थिक पक्ष मजबूत होगा। संतान के दायित्व की पूर्ति होगी। खान-पान में संयम रखें। जीविका की दिशा में प्रगति होगी। विरोधी परास्त होंगे। ससुराल पक्ष से लाभ होगा।

मीन जीवनसाथी का सहयोग व सानिध्य मिलेगा। शिक्षा प्रतियोगिता के क्षेत्र में आशातीत सफलता मिलेगी। मित्रों या रिश्तेदारों से पीड़ा मिलेगी। नेत्र विकार की संभावना है। आय के नवीन स्त्रोत बनेंगे।

यूं ही नहीं कोई बन जाता ''विद्यार्थी'

पुण्यतिथि/ अमित राजपूत

गणोश शंकर विद्यार्थी का भारतीय पत्रकारिता में होना एक ऐसी कालजयी घटना थी, कि उसकी आभा से उपजे मायने आज भी उतने ही सजीव और प्रभावी हैं। गणोशजी के न रह जाने के 88 बरस बाद भी आज ऐसा लगता है, कि मानों पत्रकारों और पत्रकारिता में समसामयिक सुधार के लिए हमें उनकी कार्यशालाओं की जरूरत है। ऐसे में ये स्पष्ट तौर पर समझा जा सकता है कि गणोश शंकर विद्यार्थी समय की सीमाओं से परे आज भी हमारे लिए कितने जरूरी हैं और हम उनके कितने अधिक जरूरतमंद? हालांकि ये बात अलग है कि 88 बरस पहले वो 25 मार्च, 1931 को कानपुर में हुए सांप्रदायिक दंगे के चलते काल के गाल में समा गए, लेकिन उनकी शहादत ने जो अमरता हासिल की है, उससे युगों-युगों तक खासतौर पर हिंदी पत्रकारिता को संजीवनी मिलती रहेगी।समझने वाली बात यह है, कि हिंदी पत्रकारिता की स्पष्टवादिता और निडरता के जो पैमाने गणोशजी ने गढ़े थे, उसके अंश मात्र को आज के संपादकों का छू पाना निपट सपना है, कइयों के लिए तो ये सपना भी मयस्सर नहीं है। इसका सबसे ताजा उदाहरण हमें बीते हफ्ते नई दिल्ली के कॉन्स्टीट्यूशन क्लब में हुए एक सेमिनार में स्पष्ट रूप से देखने को मिला जिसका विषय था- ''हिन्दी पत्रकारिता का क्या यह दब्बू युग है?' इस आयोजन में एक प्रगतिशील न्यूज एंकर ने हिंदी के कई चर्चित अखबारों की बखिया उधेड़ते हुए ये आरोप लगाया कि बिना रिपोर्टरों के मनगढंत ढंग से खबरों की तिजारत का माहौल हिंदी पत्रकारिता में धड़ल्ले से चल रहा है। इसके अलावा इसी मंच पर बतौर वक्ता पधारे एक ख्यातिलब्ध लेखक ने पहले तो मीडिया को दुत्कारा और फिर उसे याद दिलाया कि मीडिया और साहित्य कभी सहचर हुआ करते थे और आज के पत्रकारों को पढ़ने की आदत भी नहीं है। इन संदभरे से ये समझ में आता है, कि जहां गणोश जी ने भारतवर्ष में स्पष्टवादिता और निडरता की पत्रकारिता के बीज बोए थे, उसके बरक्स अब कहीं-न-कहीं पत्रकारिता का दब्बूपन या कहें कि कायरता वाला दौर चल पड़ा है। तभी तो ऐसे विषयों पर संगोष्ठियों की जरूरत पड़ती है। बहरहाल, विद्यार्थी जी के बारे में बड़ा स्पष्ट है कि उनको साहित्य में बड़ा रस मिलता था। 40 की उम्र में स्वर्गवास के 3-4 मास पहले जबकि वह हरदोई जेल में थे, उन्होंने बर्नार्ड-शॉ, अपटन, सिन्क्लेयर आदि विदेशी लेखकों की अनेक पुस्तकें एवं श्री अयोध्या सिंह उपाध्याय का ''प्रिय प्रवास' मांगकर पढ़ा था। जेल में उन्होंने खूब अध्ययन किया, सैकड़ों पुस्तकें पढ़ डालीं। शेली, स्टुअर्ड मिल, स्पेन्शर, रूसो, मोपासां, रस्किन, कारलाइस, टॉलस्टाय, थोरो, शेक्सपीयर, टेनीसन, ब्राउनिंग, आनातोले फ्रांसिस, बालजक और एचजी वेल्स आदि विदेश के सभी प्रमुख राजनीतिक और साहित्य के लेखकों की पुस्तकें उन्होंने पढ़ी थीं और जो नई निकलती थी, मंगाकर पढ़ते थे। दुखद है कि ज्यादातर मीडिया हाउसेज को अन्य संसाधनों की तुलना में एक अदद औसत लाइब्रेरी की जरूरत भी नहीं सूझती। हालांकि कुछ पत्रकार और संपादक इसके अपवाद जरूर होंगे। आज जब हम गणोश शंकर विद्यार्थी के बलिदान दिवस पर उन्हें श्रृद्धांजलि दे रहे हैं, तब हमें उनकी शहादत को भी जरूर स्मरण कर लेना चाहिए, कि कैसे 1931-32 के राजनैतिक संकट के समय उन्होंने परहित और शांति की कामना के लिए प्रयास करते हुए प्राण न्योछावर कर दिए। इस खबर से संपूर्ण देश के सक्रिय क्रांतिकारियों में कोलाहल मच गया था। लेकिन आज आलम यह है कि कुछ संपादक इतने निर्वेद में जीते हैं कि उन्हें संवेदना मशीनी उत्पाद सी लगने लगी है। इसका परिणाम पत्रकारिता पर स्याह किन्तु परिलक्षित होता है। यद्यपि विद्यार्थी जी पत्रकार के दायित्व को भलीभांति अनुभव करते थे और निभाते भी थे। किसानों, मजदूरों, देश की गरीब जनता के आर्तनाद ने उन्हें अपनी ओर चुंबक की तरह खींच लिया था। अंग्रेजों की नौकरशाही के विरुद्ध आवाज बुलंद करने के लिए वे आजीवन कमर कसे रहे। उन दिनों वे पत्रकारिता के भविष्य से इतने व्यथित थे कि उन्होंने कहा- ''इस देश में भी समाचार पत्रों का आधार धन हो रहा है। धन ही से वे निकलते हैं। धन ही के आधार पर चलते हैं और बड़ी वेदना के साथ कहना पड़ता है कि उनमें काम करने वाले बहुत से पत्रकार भी धन ही की अभ्यर्थना करते हैं। अभी यहां पूरा अंधकार भी नहीं हुआ है, किन्तु लक्षण वैसे ही हैं। कुछ ही दिन पश्चात यहां के समाचार पत्र भी मशीन के सदृश हो जाएंगे और उनमें काम करने वाले पत्रकार केवल मशीन के पुर्जे। व्यक्तित्व न रहेगा, सत्य और असत्य का अंतर न रहेगा, अन्याय के विरु द्ध डट जाने और न्याय के लिए आदतों को भुलाने की चाह न रहेगी, रह जाएगा केवल खींची हुई लकीर पर चलना।

क्या राजनीति में आएंगे अक्षय कुमार, खुद दिया जवाब

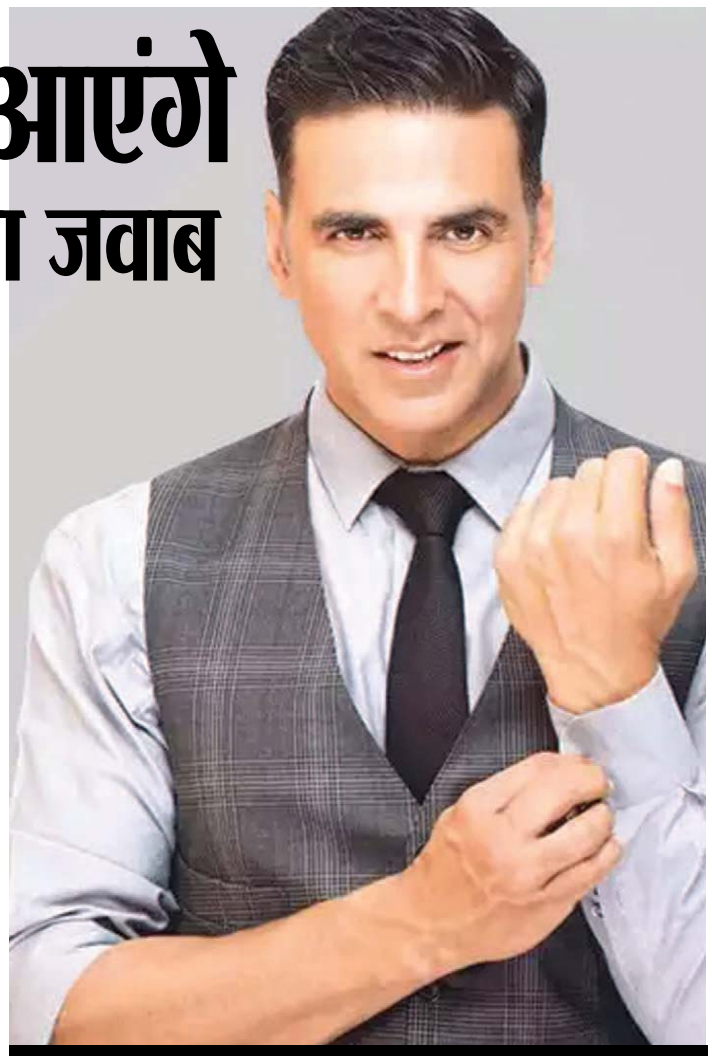

अक्षय कुमार इन दिनों रील और रियल दोनों ही फ्रंट पर खुशनुमा दौर से गुजर रहे हैं। सत्य घटना पर आधारित फिल्म केसरी रिलीज हो गई है। ईद पर सूर्यवंशी की रिलीज को लेकर चर्चा है। इस खास मुलाकात में वह केसरी, राजनीति, बीवी-बच्चों जैसे कई मुद्दों पर बात करते हैं...

लंबे अरसे से आप सामाजिक मुद्दों पर न केवल फिल्में बनाते हैं बल्कि अपनी आवाज भी मुखर करते हैं। हाल ही में पीएम के ट्वीट के बाद आपने मतदान की अपील भी की।

मैं समझता हूं कि चाहे जो भी सरकार हो उसे गाली नहीं देनी चाहिए, क्योंकि आपने ही वह सरकार चुनी है, तो देना है, तो खुद को गाली दो। मैं आपको एक उदाहरण दूंगा। जब आप धोनी को कप्तान के रूप में देखते हो, तो वह बीसीसीआइ और बड़े दिग्गजों और टीम द्वारा चुनकर आता है। अब टॉस जीतने बाद बैटिंग बोलेगा, तो आपको बैटिंग लेनी पड़ेगी। अब आप उसे ये नहीं सकते कि इस बेवकूफ को फील्डिंग लेनी चाहिए। टीम अगर कप्तान का अनुसरण करेगी, तो उस टीम को हराना मुश्किल होगा। उसी हिसाब से जिसको आपने एक बार चुन लिया, अब वे जो भी बोले, उसे आपको सुनना है और मानना है। आपने उनको पांच साल के लिए चुना है, तो चुप करके उन्हें सुनो।

आपके सामाजिक सरोकारों को देखकर कयास लगाए जा रहे हैं कि बहुत जल्द आप राजनीति में प्रवेश करनेवाले हैं?

नहीं, नहीं मुझे राजनीति में नहीं जाना है। मेरा ऐसा कोई इरादा नहीं।

बच्चे बड़े हो रहे हैं, तो पिता के रूप में आपकी भूमिका कितनी बदली है?

आठ-नौ साल के होने के बाद बच्चे अपना डिसिजन खुद लेना चाहते हैं। आप उन्हें गाइड कर सकते हैं, उन्हें आदेश नहीं दे सकते। आपको बच्चों को बताना होगा कि शराब और सिगरेट पीना गलत है। अगर इसके बाद भी तुझे पीना है, तो मेरे सामने पी ताकि तू लड़खड़ाए तो मैं तुझे संभाल सकूं। बच्चों पर आप जोर-जबरदस्ती अंकुश नहीं लगा सकते। ऐसा किया, तो वे मौका मिलते ही मनमानी करेंगे। मैं बच्चों के साथ यही रवैया अपनाता हूं। जब मेरे बेटे ने मुझसे कहा कि वह फलां स्कूल में दाखिला लेना चाहता है, तो मैंने उसे इजाजत दी। उसने खुद ही फॉर्म भरा। मेरा काम है चेक पहुंचाना। मैं इंटरव्यू में उसके साथ गया था। वह काफी आत्मनिर्भर है। सारे काम खुद करता है। वैसे भी यंगस्टर को उड़ने का बहुत शौक होता है। भले बचपन से उन पर मां-बाप का साया रहा हो, मगर एक उम्र के बाद वे खुद उड़ना चाहते हैं।

आज के टूटते रिश्तों में आपकी और ट्विंकल की शादी आदर्श मानी जाती है। आप सुखी वैवाहिक जीवन के लिए क्या टिप्स देना चाहेंगे?

मैंने सुखी वैवाहिक जीवन पर कोई पीएचडी नहीं की है। (हंसते हैं) मैं तो खुद को आम पति मानता हूं। मुझे लगता है, शादी में जियो और जीने दो वाला फंडा अपनाना चाहिए। बीवी को खुश रखना चाहिए। उसे समय देना जरूरी है। 8-9 घंटे जमकर काम करो और फिर परिवार को वक्त दो।

केसरी में आपका लुक और एक्सप्रेशन किरदार के अनुरूप परफैक्ट रहे हैं?

ये सही है कि अगर फिल्म के किरदार को लेकर आपका लुक परफैक्ट है, तो आपका पचास प्रतिशत काम हो ही जाता है। असल में इसकी कहानी ने भी मुझे कहीं न कहीं बहुत ज्यादा प्रेरित किया। ये कहानी इतिहास के पन्नों पर तो दर्ज है, मगर लोगों को पता नहीं है कि किस तरह 21 लोगों के सामने दस हजार लोगों की फौज खड़ी थी। वे चाहते तो भाग सकते थे। उन्हें भागने के लिए कहा भी गया, मगर वे अपने सम्मान और देश के लिए लड़े। इस शौर्य गाथा के कारण आपके एक्सप्रेशन देशभक्ति से परिपूर्ण हो ही जाते हैं। वैसे भी जब आप पगड़ी पहनते हैं, तो आपके अंदर एक रौनक आ ही जाती है। जब बॉलिवुड फिल्म 300 आई थी, तो हम अभिभूत हो गए थे कि कैसे 8000 लोगों के सामने मात्र 300 सैनिक लड़े थे। वह काल्पनिक थी, मगर केसरी सच्ची घटना पर है।

केसरी रंग शौर्य का प्रतीक माना जाता है। आपने अपने असल जीवन में शौर्यता कब महसूस की?

मैं एक रील हीरो हूं, रियल हीरो नहीं हूं, मगर जब भी किसी को यूनिफॉर्म में देखता हूं तो खुद-ब- खुद गर्व से भर जाता हूं। वैसे भी जो भी यूनिफॉर्म पहनता है, उसमें रौब, एलिगेंस और एक समर्पण आ ही जाता है। चाहे वो किसी भी किस्म की यूनिफॉर्म हो। यूनिफॉर्मवाले को देखकर आपकी यह धारणा पुख्ता हो जाती है कि इसमें अनुशासन जरूर होगा। मेरे पिताजी आर्मी में थे, तो यूनिफॉर्म हमेशा से मेरे लिए खास रही है। जब भी मैं आर्मी कैंप जाता हूं। बीएसएफ या आईटीबीपी जवानों से मिलता हूं, तो मेरे भीतर भी बहादुरी का जज्बा भर जाता है।

सर्जिकल स्ट्राइक के बाद देश में देशभक्ति की लहर चल रही है। केसरी का विषय भी देशभक्ति पर आधारित है, तो इस लहर का फिल्म को कितना फायदा मिलेगा?

ये हमारे देश में हमेशा से होता है। जब भी टेररिस्ट अटैक होता है, देशप्रेम की भावना अपने आप दौड़ने लगती है। वैसे भले देशवासी पूरा समय चुपचाप बैठे रहें, देश से वास्ता न रखें, मगर जब देश के लिए खड़े होने की बात आती है, तो सभी एकजुट हो जाते हैं। जब मैंने भारत के वीर जैसा ऐप लॉन्च किया और अपील की, तो कितने सारे पैसे इकट्ठा हो गए। मैं गर्व से कह सकता हूं कि इस ऐप के जरिए 500 से 600 जवानों को पैसे जा चुके हैं। हमने यह फिल्म एक साल पहले अनाउंस की थी और तब हम नहीं जानते थे कि रिलीज के वक्त देशभक्ति की लहर दौड़ेगी। मैं फिल्म को फायदे-नुकसान के नजरिए से नहीं देख रहा हूं। आपके जरिए रीडर्स से अपील करना चाहूंगा कि अपने बच्चों और यूथ को यह फिल्म जरूर दिखाएं। यूथ को इतिहास से जोड़ना जरूरी है। उन्हें पता होना चाहिए कि अपने वतन के लिए लोगों ने क्या-क्या किया है।

आप अपने बच्चों को इतिहास की कहानियों से वाकिफ कराते हैं?

आप अगर अपने बच्चों को जबरदस्ती बैठाकर इतिहास की कहानियां सुनाने लगें, तो वे भाग खड़े होंगे। आपको उन्हें फिल्म, सिनेमा या किसी किताब के बहाने ये कहानियां बतानी होंगी। अब जैसे पैडमैन के बाद मेरे बेटे को छोटी उम्र में सैनिटरी पैड और माहवारी के बारे में पता चला। तब वह माहवारी से जुड़ी समस्याओं को जान पाया।

जबसे सूर्यवंशी की ईद रिलीज की घोषणा हुई है, लोग कह रहे हैं अक्षय कुमार ने सलमान खान की ईद पर कब्जा कर लिया है?

मैं तो इन बातों के बारे में सोचता ही नहीं। इसके बारे में सोचना ही बेकार है। ये सब उपजाई हुई बातें हैं। इस बारे में न किसी ऐक्टर ने मुझसे कुछ कहा, न मैंने किसी से कुछ बात की। जब कुछ कहना-सुनना हुआ ही नहीं, तो मीडिया ये सवाल क्यों करता है? जानबूझकर पूछताछ करके कॉम्पिटिशन कराने की जरूरत नहीं है।

मैंने सलमान को हमेशा अपने बच्चे जैसा समझा है: जैकी श्रॉफ

ऐक्टर जैकी श्रॉफ इस समय अपनी आने वाली फिल्म 'रोमियो अकबर वॉल्टर' के रिलीज होने का इंतजार कर रहे हैं। इस फिल्म के अलावा जैकी श्रॉफ फिल्म 'भारत' में भी काम कर रहे हैं और इसमें वह सलमान खान के पिता का रोल निभाते नजर आएंगे। सलमान और जैकी दोनों ने ही अपना फिल्मी सफर 80 के दशक में शुरू किया था और दोनों की उम्र में लगभग 10 साल का अंतर है। फिर भी जैकी इस रोल को करने के लिए तैयार हो गए।

मिड-डे की एक रिपोर्ट के मुताबिक, जैकी ने कहा कि वह उन्हें पता है कि उनकी और सलमान की उम्र में केवल 10 साल का अंतर है। उन्होंने बताया कि दोनों का करियर भी लगभग एक ही समय पर शुरू हुआ था लेकिन उन्हें सलमान खान के पिता का किरदार निभाने में कोई दिक्कत नहीं है। जैकी ने आगे कहा कि वह सलमान खान को अपने बच्चे जैसा समझते हैं और अभी भी वह उनके लिए बच्चे जैसे ही हैं।

जैकी ने यह भी बताया कि करियर के शुरुआती दिनों में सलमान को उनकी जीन्स और जूते काफी पसंद थे। जैकी इससे पहले फिल्म 'यादें' में करीना कपूर के और 'धूम 3' में आमिर खान के पिता का किरदार भी निभा चुके हैं। इससे पहले जैकी श्रॉफ और सलमान ने 'बंधन', 'कहीं प्यार न हो जाए', 'क्योंकि' और 'वीर' जैसी फिल्मों में काम किया है।

धारावाहिकों में ऐतिहासिक तथ्यों से छेड़छाड़ गलत: रजा मुराद

बॉलीवुड के जाने-माने अभिनेता रजा मुराद ने ऐतिहासिक किरदारों पर आधारित टेलीविजन धारावाहिकों में तथ्यों को तोड मरोड़कर मसालेदार अंदाज में पेश किये जाने को गलत करार देते हुए कहा कि जो होना चाहिये और जो हो रहा है, उसमें बड़ा फर्क है। अपनी फिल्म दुलारी की शूटिंग के लिये लखनऊ आये रजा मुराद ने भाषा से बातचीत में आजकल ऐतिहासिक घटनाओं और किरदारों पर आधारित टीवी धारावाहिकों में तथ्यों, घटनाक्रमों और पात्रों के पहनावों तथा भाव-भंगिमाओं को मनमाने तरीके से पेश किये जाने पर चिंता जाहिर करते हुए कहा कि इससे ऐतिहासिक तथ्यों के बारे में नयी पीढ़ी में गलतफहमियां फैल रही हैं। प्रेम रोग , बाजीराव मस्तानी , पद्मावत और राम तेरी गंगा मैली जैसी ब्लॉकबस्टर फिल्मों में यादगार किरदार निभा चुके मुराद ने अक्सर धारावाहिकों में ऐतिहासिक तथ्यों को गलत तरीके से पेश किये जाने पर उपकार फिल्म में प्राण द्वारा कहा गया एक संवाद याद करते हुए कहा दिन में मैं वह कहता हूं, जो होना चाहिये, और रात में मैं वह कह रहा हूं जो हो रहा है। तो जो होना चाहिये और जो हो रहा है, उसमें बड़ा फर्क है। उन्होंने कहा कि टीवी मीडिया उद्योग और फिल्म इंडस्ट्री की हमेशा से जिम्मेदारी रही है कि वह समाज को उसके आज और गुजरे हुए कल के बारे में सही और तथ्यात्मक जानकारी दे, मगर बाजारीकरण के इस दौर ने प्राथमिकताओं को पूरी तरह बदल डाला है। अब तक 250 से ज्यादा फिल्मों में विभिन्न भूमिकाएं निभा चुके मुराद ने एक सवाल पर कहा कि खासकर ऐतिहासिक पृष्ठभूमि पर आधारित धारावाहिकों के निर्माण में तथ्यों को लेकर जरूरी गहरे शोध की घोर कमी महसूस होती है। यहां तक कि पौराणिक धारावाहिकों में भी तथ्यों से छेड़छाड़ नजर आती है। साथ ही धार्मिक मान्यताओं से जुड़ी चीजों के चित्रण में भी अधकचरापन नजर आता है। उन्होंने कहा कि इससे पहले कि चीजें और ज्यादा खराब हों, इस चलन को जल्द से जल्द रोका जाना चाहिये। मुराद ने पद्मावत फिल्म को लेकर पिछले साल देश के विभिन्न हिस्सों में हुए बवाल के बारे में कहा यह तो प्रजातंत्र है ही नहीं कि बिना किसी गवाही और सुबूत के आधार पर आप किसी नतीजे पर पहुंच जाएं। प्रदर्शन करने का हक तो सभी को है, लेकिन कानून को अपने हाथ में लेना, तोड़फोड़ करना तो कानूनन जुर्म है।

कौन हैं लक्ष्मी अग्रवाल, जिनका किरदार निभा रही हैं दीपिका पादुकोण

लंबे वक्त से दीपिका पादुकोण की आने वाली फिल्म 'छपाक' की चर्चा थी। मेघना गुलजार द्वारा डायरेक्ट की जा रही इस फिल्म में दीपिका ऐसिड अटैक पीड़िता लक्ष्मी अग्रवाल के किरदार में नज़र आएंगी। सोमवार को फिल्म से दीपिका का फर्स्ट लुक रिलीज़ किया गया, जो देखते ही देखते इंटरनेट पर छा गया। दीपिका इस लुक में बिल्कुल लक्ष्मी अग्रवाल जैसी ही लग रही हैं।

लक्ष्मी अग्रवाल आज फैशन की दुनिया में जाना-माना नाम हैं और साथ में वह स्टॉप सेल ऐसिड की कैंपेनर हैं, लेकिन आज से कुछ साल पहले उन्हें क्या पता था कि एक घटना उनकी जिंदगी को तहस-नहस कर देगी। लक्ष्मी अग्रवाल का जन्म दिल्ली के एक गरीब परिवार में हुआ था। भले ही उनका बचपन गरीबी में बीत रहा था, लेकिन लक्ष्मी के सपने काफी बड़े थे। लक्ष्मी को म्यूजिक का काफी शौक था और वह बड़े होकर या तो सिंगर बनना चाहती थीं या फिर एक कथक डांसर। चूंकि लक्ष्मी के पिता एक कुक थे, इसलिए उनके पास इतने पैसे भी नहीं थे कि लक्ष्मी अपना सिंगर और डांसर बनने का सपना पूरा कर पाएं।

इसी बीच एक लड़के को लक्ष्मी अग्रवाल से प्यार हो गया और वह लक्ष्मी को शादी करने के लिए फोर्स करने लगा। लक्ष्मी ने उसके प्रपोजल को हर बार ठुकरा दिया। इसके बावजूद उसने लक्ष्मी का पीछा नहीं छोड़ा। फिर वह दिन आ ही गया जिसकी किसी ने कल्पना भी नहीं की थी। साल 2005 की बात है, लक्ष्मी घर से कुछ दूरी पर ही स्थित बुकशॉप पर जाने के लिए घर से निकलीं और तभी उस लड़के ने ऐसिड से भरी बोतल लक्ष्मी के मुंह पर फेंक दी। उसके साथ दो लोग और भी थे। लक्ष्मी को 'ना' की कीमत ऐसिड अटैक के रूप में चुकानी पड़ी। वह सड़क पर पड़ीं तड़पती रहीं। तब एक टैक्सी ड्राइवर ने लक्ष्मी को उठाया और अस्पताल पहुंचाया।

अटैक के बाद लक्ष्मी को महीनों तक अस्पताल के बिस्तर पर ही पड़े रहना पड़ा। वह रात-दिन तड़पती रहीं और शीशे में अपना चेहरा देखने से भी कतराती थीं। 7 सर्जरी हो चुकी थीं, लेकिन लक्ष्मी को नॉर्मल होने में लंबा वक्त लग रहा था। ठीक होने के बाद जब पहली बार उन्होंने शीशे में अपना चेहरा देखा तो वह टूटकर बिखर गई थीं। ऐसिड अटैक के एक साल बाद लक्ष्मी अग्रवाल ने तेजाब की बिक्री पर बैन लगाने के लिए कोर्ट में पीआईएल दायर की। यह केस 2013 तक चलता रहा और आखिरकार सुप्रीम कोर्ट ने तेजाब की बिक्री पर आजीवन बैन लगाने का फैसला सुना दिया।

इस अटैक के बाद भी लक्ष्मी ने खुद को टूटने नहीं दिया। तेजाब की बिक्री पर बैन लगवाने के बाद लक्ष्मी ने स्टॉप ऐसिड अटैक्स के लिए कैंपेन किया। इस कैंपेन की नींव आलोक दीक्षित और आशीष शुक्ला ने रखी थी। लक्ष्मी ऐसिड अटैक सर्वाइवर्स की आवाज़ बन चुकी थीं। इसके लिए उन्हें मिशेल ओबामा ने इंटरनैशनल विमिन ऑफ करेज अवॉर्ड से नवाजा। इसी कैंपेन के दौरान लक्ष्मी को आलोक दीक्षित से प्यार हो गया और उन्होंने लिव-इन में रहने का फैसला किया। आज उनकी एक बेटी भी है, जिसका नाम पीहू है।

लंदन में दक्षिण एशियाई फिल्म फेस्टिवल का उद्घाटन करेंगी जीनत अमान

सत्तर और अस्सी के दशक की ग्लैमरस फिल्म अभिनेत्री जीनत अमान ब्रिटेन के दक्षिण एशियाई फिल्म उत्सव का लंदन में अगले बुधवार को उद्घाटन करेंगी। ''हरे रामा हरे कृष्णा'' और ''कुर्बानी'' जैसी फिल्मों से हिन्दी सिनेमा में अपनी एक अलग पहचान बनाने वाली 67 वर्षीय अभिनेत्री जीनत अमान यूके एशियाई फिल्म उत्सव की शुरूआत करेंगी।

यह उत्सव अब अपने 21वें वर्ष में है। चार मई तक चलने वाले इस उत्सव में ब्रिटेन के पांच शहरों एडिनबर्ग, ग्लासगो, लीसेस्टर,लंदन और मैनचेस्टर में दक्षिण एशिया की कई फिल्मों को प्रदर्शित किया जायेगा।

उत्सव के निर्देशक पुष्पिंदर चौधरी ने कहा कि इस साल का उत्सव फिल्मों के माध्यम से साधारण व्यक्ति की प्रासंगिक कहानियों को प्रस्तुत करेगा। इस उत्सव के अन्य मुख्य आकर्षण में भारतीय उपमहाद्वीप से फिल्मों की स्क्रीनिंग और वर्ल्ड प्रीमियर्स की एक श्रृंखला शामिल है।

चौकीदार चौर नहीं है... मोदी के समर्थन में लगे बैनर

सूरत। आगामी 23 अप्रैल को लोकसभा चुनाव होने जा रहा है। इस लिए भाजपा पक्ष द्वारा अनेक बैठकों के बाद अपने उम्मीदवारों के नाम घोषित किए है। उम्मीदवारों के नाम की घोषणा होते ही पोस्टर वार शुरु हो गया है।

पांडेसरा में महिला की उपचार के दौरान मौत

सूरत। सूरत शहर के पांडेसरा विस्तार में भोजन बनाते वक्त महिला के जल जाने से उपचार के लिए नई सिविल अस्पताल ले जाया गया था। 50 प्रतिशत से भी अधिक जल जाने के कारण महिला की रविवार के दिन मौत हो गई। सिविल सूत्रों से प्राप्त जानकारी के अनुसार पांडेसरा विस्तार स्थित भीड़भंजन उमियानगर में 37 वर्षीय सुनिता रामनिवास राजभर परिवार के साथ रहती थी। गत 21 मार्च 2019 क ो शाम के 4 बजे के करीब सुनिता प्राइमस पर खाना बना रही थी। प्राइमस में अचानक ब्लास्ट हो जाने से वह बुरी तरह जल गई, जिससे उसे उपचार के लिए नई सिविल अस्पताल ले जाया गया था।

शहर में स्वाइन फ्लु के और 11 मामले दर्ज

सूरत। सूरत शहर समेत समग्र राज्यभर में हाहाकार मचाने वाले स्वाइन फ्लु का कहर यथावत है। एक ओर सूरत महानगर पालिका का स्वास्थ्य विभाग स्वाइन फ्लु से बचने के लिए मात्र नोटिफिकेशन बाहर ला रहा है तो दूसरी ओर शहर में दिन प्रतिदिन स्वाइन फ्लु का कहर बढ़ता जा रहा है। ऐसे में रविवार को शहर में स्वाइन फ्लु के नए 11 केस पोजिटीव आये हैं। जिसमें पीपलोद में 73 वर्षीय वृद्ध, वेसू में 56 वर्षीय अधेड़ महिला, कापोद्रा में 3 वर्षीय बालक, एल.एचरोड और वराछा में 5 वर्षीय बच्ची, पर्वत पाटिया में 75 वर्षीय वृद्धा, पालनपुर पाटिया में 35 वर्षीय महिला, रांदेर रोड पर 65 वर्षीय वृद्ध, एलपी सवानी सर्कल पर 45 वर्षीय महिला, पाल में 33 वषीय महिला और अडाजण में 57 वर्षीय अधेड़ को उपचार के लिए अस्पताल में भर्ती कराया गया है। अब तक शहर में 339 केस दर्ज हुए हैं और तीन लोगों की मौत हुई है। जबकि जिले में 50 केस दर्ज हुए हैं और 4 लोगों की मौत हो चुकी है।

सूरत। ओलपाड रोड़ पर सोमावार को एक बाईक व ट्रक के एस्डिेंट में बाईक सवार की घटना स्थल पर ही मौत हो गई। बाईक सवार जहांगीरपुरा वार्ड ओफिस में सफाईकर्मी के रुप में काम करता था।

भाई को टिकट मिलने से छोटा भाई नाराज

अहमदाबाद। भाजपा ने दक्षिण गुजरात की वलसाड लोकसभा सीट के मौजूदा सांसद केसी पटेल को रिपीट किया है। जिससे केसी पटेल के छोटे भाई डीसी पटेल नाराज हो गए हैं और प्रस्ताव मिलने पर कांग्रेस में शामिल होने की तैयारी कर ली है। डीसी पटेल के मुताबिक इस बार उनका नाम भाजपा की चयन प्रक्रिया में सबसे आगे थे। टिकट कटने से नाराज डीसी पटेल ने कांग्रेस का प्रस्ताव मिलने पर उसमें शामिल होकर वलसाड सीट से चुनाव लड़ने की तैयारी दर्शाई है। डीसी पटेल ने कहा कि हांलाकि अब तक उन्होंने कांग्रेस से स पर्क नहीं किया है। यदि कांग्रेस संपर्क करती है और समर्थक कहते हैं तो वह कांग्रेस में जाने पर जरूर विचार करेंगे। साथ ही उन्होंने यह भी कहा कि वह सामने चलकर कांग्रेस से स पर्क नहीं करेंगे। जनसंघ के जमाने से जुड़े डीसी पटेल ने कहा कि वलसाड सीट के भाजपा दावेदारों में उनका नाम सबसे आगे था।

ऐसी टिप्पणियां दुर्भाग्यपूर्ण हैं : कांग्रेस

राहुल गांधी जहर पिएं और जिंदा रहकर दिखाएं : गणपत वसावा

राहुल शिव के अवतार हैं जैसा कि उनके पार्टी कार्यकर्ता दावा करते हैं तो वह विष पीकर जिंदा रहकर दिखाएं

अहमदाबाद । गुजरात के एक मंत्री ने पौराणिक कथाओं का हवाला देकर राहुल गांधी को विष पीने और उसके बाद जिंदा रहकर दिखाने की चुनौती देकर नए विवाद को जन्म दे दिया है । मंत्री ने कहा कि अगर राहुल वाकई शिव के 'अवतार' हैं जैसा कि उनके पार्टी कार्यकर्ता दावा करते हैं तो वह विष पीकर जिंदा रहकर दिखाएं ।

सूरत के बारदोली में एक जनसभा में गुजरात जनजातीय विकास मंत्री गणपत वसावा ने कहा कि गांधी शिव के अवतार हैं, यह तभी सही माना जाएगा अगर वह ५०० ग्राम जहर के सेवन के बाद जीवित रह जाएं। वसावा ने कहा, कांग्रेस के लोग दावा करते हैं कि राहुल गांधी शिव का अवतार हैं । अब, क्योंकि भगवान शिव ने लोगों को बचाने के लिए विष को पी लिया था , मैं चाहता हूं कि कांग्रेस के कार्यकर्ता अपने नेता को ५०० ग्राम जहर पीने के लिए दें ।

वसावा ने कहा, अगर जहर पीने के बाद वह भगवान शिव जैसे जीवित रह जाएं तो हम सभी मान लेंगे कि वह शिव के सच्चे अवतार हैं । बीजेपी मंत्री के शिव वाले इस तंज से बौखलाई कांग्रेस ने इसे अत्यंत दुर्भाग्यपूर्ण करार दिया है और कहा है कि यह पार्टी के वास्तविक चरित्र को दर्शाती है जो चुनाव में हार के डर से सामने आ रहा है । गुजरात कांग्रेस के प्रवक्ता मनीष दोशी ने कहा, हमारे नेता के बारे में ऐसी टिप्पणियां अत्यंत दुर्भाग्यपूर्ण हैं । यह बीजेपी और उसके नेताओं के वास्तविक चरित्र को दर्शाता है । वह कुंठा से ऐसे बयान दे रहे हैं क्योंकि उन्हें लोकसभा में उनकी हार नजर आ रही है ।

हाटकेश्वर में चाकू से वार करके युवक की हत्या

उधार दिया २५ हजार मांगने पर दोस्त ने ही दोस्त की हत्या की

हत्या में आरोपी दोस्त हर्षदसिंह चावडा के अलावा अन्य लोग भी शामिल होने की आशंका : पुलिस जांच शुरू

अहमदाबाद । शहर के पूर्व क्षेत्र में क्राइम बढ़ता ही जा रहा है । मामूली बात में तथा रुपये की लेन-देन जैसी बातों में चाकू, तलवार के द्वारा हमले की घटनाएं बढ़ रही है । पिछले दस दिन में पूर्व क्षेत्र में चार हत्या की घटना हुई है । हाटकेश्वर क्षेत्र में गत दिन देर रात को एक युवक की इसके दोस्त ने हत्या करने से पूरे क्षेत्र में सनसनी मच गई । रुपये की लेन-देन मामलों में को चाकू से वार करके दोस्त ने दोस्त की हत्या कर दी । मृतक युवक दोस्त से २५ हजार रुपया मांगता था, नहीं देने से उसने अपने दोस्त को ही गुस्से में आकर हत्या कर दी ।

हाटकेश्वर क्षेत्र में स्थित भगवतीनगर सोसाइटी में रहते मनोजभाई राजूभाई धवाण ने अमराईवाडी पुलिस स्टेशन में हर्षदसिंह दिनेशसिंह चावडा (निवासी-पार्थ अपार्टमेंट, हाटकेश्वर) विरूद्ध में हत्या की शिकायत अमराईवाडी पुलिस स्टेशन में की है। हाटकेश्वर क्षेत्र में गत दिन देर रात को एक युवक की इसके दोस्त ने हत्या करने से पूरे क्षेत्र में सनसनी मच गई । रुपये की लेन-देन मामलों में को चाकू से वार करके दोस्त ने दोस्त की हत्या कर दी । मृतक युवक दोस्त से २५ हजार रुपया मांगता था, नहीं देने से उसने अपने दोस्त को ही गुस्से में आकर हत्या कर दी । शिकायत में लगाये आरोप के अनुसार, मनोज का नानोभाई केवल उर्फ जाडियो इसके दोस्त हर्षदसिंह से पिछले कई दिनों से रूपया मांगता था । हर्षदसिंह को कोई जरूरी काम होने से केवल ने इसे २५ हजार रुपया दिया था । केवल को रुपये की जरूरत होने से इसे हर्षदसिंह से रुपये की मांग की थी । हर्षदसिंह ने रुपये देने का प्रोमिस करता था । अक्सर केवल हर्षदसिंह से रुपया मांगता था । हर्षद ने रुपये नहीं देने से केवल ने इसके माता-पिता और भाई को भी इस मामले में बात की थी । गत दिन हर्षद ने केवल को घर पर बुलाया था और इसे रामनगर सार्वजनिक रोड पर एक के बाद एक चाकू से वार करके युवक की हत्या कर दी । पूरे घटना की जानकारी अमराईवाडी पुलिस को मिलने पर वह तुरंत पहुंच गई और केवल की लाश को पोस्टमोर्टम के लिए भेज दिया और हर्षद विरूद्ध में अपराध दर्ज किया गया था। मृतक केवल के पिता राजूभाई ने बताया कि, हर्षद शराब का धंधा करता है। हर्षद की शराब की पेटी पुलिस ने ज ब्त किए जाने से केवल ने इसे रूपया दिया था ।

जैन समाज के महाराज साहब का निधन होने के बाद जैन समुदाय के लोगों में शोक की लहर फैल गई । उनके अंतिम दर्शन के लिए समुदाय के लोग पहुंचे ।

स्वामी, मुद्रक व प्रकाशक सुरेश मौर्या द्वारा अष्ट विनायक ऑफसेट एफपी. 149, प्लोट 26 खोडियार नगर, सिद्धीविनायक मंदिर के पास, (भाटेना) हॉ.सो. अंजना सूरत, गुजरात से मुद्रित, एवं 191 महादेव नगर, हरि नगर-2 के पीछे, उधना, जिला-सूरत, गुजरात से प्रकाशित, **संपादक :- सुरेश मौर्या** फोन नं. (9879141480) **RNI.No. : GUJHIN/2018/75100, E-mail: krantisamay@gmail.com (subject to surat jurisdiction)**